वर्ष 21 अंक 12
27 दिसम्बर 2023
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 31 दिसम्बर 2023

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

॥ ओ३म्॥

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 21 — अंक 09

27 नवंबर + दिसंबर 2023

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2080

दयानन्दाब्द 199

सलाहकार मण्डल

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति .... ₹ 20,00

वार्षिक .... ₹ 300,00

आजीवन .... ₹ 2000,00

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... ₹ 250

चौथाई पृष्ठ .... ₹ 150

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय — 04
- अन्वेषण — 06
- क्रियात्मक योगाभ्यास से लाभ — 07
- महर्षि दयानन्द कन्या गुरुकल मोहन बडोदिया का 5 वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न — 08
- सनातन संस्कृति का मान/ गुरुकुलीयण शिक्षा महान — 15
- महू में 12 वाँ गायत्री महायज्ञ सम्पन्न — 17
- महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण कितना सार्थक व उपयोगी — 23
- देखिए तो, कितना दयालु है, ईश्वर — 24
- आर्य समाज के मूर्धन्य लाला लाजपतराय — 27
- अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी महानुभाव — 30

सम्पादकीय :

प्रजातन्त्र का बन रहा मजाक

विडम्बना है प्रजातन्त्र का खुला मजाक इस समय देखा जा रहा है और समाज मौन हैं।

किसी भी देश की व्यवस्था के संचालन में वहाँ के नागरिको की स्वतंत्र रूप से भागीदारी किसी भी प्रजातान्त्रिक देश का आधार होती हैं। वहाँ के नागरिक स्वेच्छा से, स्वविवेक से किसी व्यक्ति अथवा दल को देश प्रदेश के नेतृत्व सौपने का निर्णय लेते हैं। यह प्रक्रिया निर्वाचन के माध्यम से सम्पन्न होती हैं जिसे देश के नागरिक अपना मत देकर सार्थक करते हैं। नागरिकों के द्वारा दिया गया अपना मत एक सरकार का गठन करता हैं।

इस निर्वाचन और मतदान का मुख्य कारण यही है कि देश के नागरिक किसी अच्छे व्यक्ति को जो किसी दल से जुड़ा है उसे चुनकर नेतृत्व किसी पार्टी को सौपें। इस चुनाव में वे उसे चुने जो देश हित में कार्य करे, सुशासन दे सके नागरिकों की प्रारंभिक आवश्यकताओं, प्रगति और सुरक्षा प्रदान करें। इस हेतु जिसे अपना मत देना है उसकी रीतिनीती, कार्य पद्धती और यदि पूर्व में उसे नेतृत्व का अवसर मिला हो तो उसका पूर्व कार्यकाल क्या रहा, किस प्रकार रहा इन पर चिन्तन करके उसे चुनना एक सही प्रजातन्त्र का महत्वपूर्ण सशक्त प्रयास हैं।

किन्तु क्या आज यह होता दिखाई दे रहा है ? क्षमा करना हमारा नेतृत्व करने की होड़ में जुटे नेता और पार्टियां इस प्रजातन्त्रीय प्रणाली की धज्जियां उडाने में एक से बढ़ कर एक कार्य कर रहे हैं।

यह देश हित में बहुत बड़ा पाप हो रहा है नागरिकों को उनके स्वविवेक से लेने वाले निर्णय से उन्हें लालच और विभिन्न प्रकार की सुविधाएं देकर वंचित किया जा रहा हैं। नागरिकों की सुख सुविधा सुरक्षा का ध्यान रखना उनकी व्यवस्था करना अच्छा है, होना

भी चाहिए। किन्तु अपने निज स्वार्थ हेतु सत्ता भोगी स्वप्नों को पूर्ण करने के लिए उन्हें वह सब लुटाना सुविधाएँ देना, उनको धोखा देना है, मुफ्त के सुविधाभोगियों की संख्या बढ़ते जायेगी। आज जो सुविधाएं उन्हे दी जा रही है वे भविष्य में उनका अधिकार बन कर सामने खड़ी हो जावेगी। जैसे आरक्षण एक समय सीमा तक देना उचित था कुछ इसके लिए अधिकारी थे। किन्तु आज आरक्षण एक अधिकार के रूप समस्या बन गया और निर्वाचन के समय उसे मनवाने का शस्त्र बन गया। राजनेता उनकी यह मांग स्वीकार करने को मजबूर हो जाते हैं। देश को लुटाकर अपना साम्राज्य करने में जुटी राजनीती राष्ट्र के लिए भारी नुकसान दायक हैं।

आने वालों का भविष्य दुःखदायी हो जायेगा। आज का नवयुवक रोजगार सरकारी नौकरी को ही रोजगार मानता हैं। उसकी इस भावना को विपक्षी दल सत्ताधारी पक्ष के खिलाप बढ़ाने में और उनकी मांग पूरी करने के आश्वासन में कोई कसर नहीं छोड़ते। बेरोजगारी के नाम पर घर बैठे उनको पैसा देना उन नवयुवकों को अकर्मण्य बनाने का कार्य हैं। वे स्वंय के विवके व प्रयास से कुछ सोचेगें ही नहीं वे अपना स्वंय का या, पैतृक व्यवसाय को महत्व नहीं देगें। बस राजनेताओं के आश्वासन को अपनी आशा का केन्द्र मानकर निठ्ठल्ले बनेगें।

आज निर्वाचन में मतदान नहीं रहा, मत का दाम चल रहा हैं। बड़ी संख्या में मतदाता इस बात का इंतजार करते है कौन कितना उसे देने वाला हैं। स्वाभाविक है जिससे अधिक लाभ होगा उसे ही वोट देगें क्योंकि अनेक प्रकार की सुविधाए धन, भूमि नौकरी देकर एक मत दाता को आकर्षित किया जा रहा हैं। ऐसे मतदाताओं की संख्या करोड़ो में है जो देश हित के स्थान पर स्वहित को महत्त्व देकर, उचित अनुचित विचारों की उपेक्षा कर अपना वोट देते है यह प्रवृत्ती आगे और बढ़ेगी। मतदाता का वोट योग्यता व विश्वास पर नहीं उसको मिलने वाली सुविधाओ पर हो रहा हैं।

यह प्रजातन्त्रीय प्रणाली का हिस्सा नहीं है, यह एक कम्पनी या दुकानदार द्वारा ग्राहको को लुभाने के लिए अनेक प्रकार की गिफ्ट या सुविधा देने जैसा हैं। ऐसा निर्वाचन प्रजातन्त्रीय प्रणाली का मजाक है देश के लिए भावी खतरा है नागरिको के भविष्य से खिलवाड़ हैं।

समय रहते इस विचार धारा का मतदाता के ईमान खरीदने की दुषित प्रक्रिया का देश के नागरिको को विरोध करना चाहिए यह देश हित में एक महत्वपूर्ण एवं आज की आवश्यकता हैं।

अन्वेषण

– रामनरेश त्रिपाठी

मैं ढूंढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।।

तू आह बन किसी की, तुझको पुकारते था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में।।

मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में।।

दुःख से रूला रूलाकर तूने मुझे चिताया।
मैं मस्त हो रहा था तब हाय अंजुमन में।।

बाजे बजा–बजाकर मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में।।

तू बीच में खड़ा था बेबस गिरे हुओं के।
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहां चरन में।।

तूने दिए अनेकों अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।।

कैसे तुझे मिलूंगा जब भेद इस कदर है।
हैरान होके भगवन्, आया हूं सरन में।।

तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।।

हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू।
देखूं तुझे रगों में, मन में तथा वचन में।।

दुःख में न हार मानूं, सुख में तुझे न भूलूं।
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में।।

क्रियात्मक योगाभ्यास से लाभ

योगाभ्यास किसी एक किया विशेष का नाम नहीं है, अपितु इस शब्द से योगदर्शन में बताये गये योग के आठों अंगों (यम–नियम आदि) का ग्रहण करना चाहिए। जो व्यक्ति इन योग श्रद्धा, तपस्या पूर्वक लम्बे काल तक इनका पालन करता है, उसको निम्नलिखित लाभ होते हैं–

1. बुद्धि का विकास होता है, जिससे व्यक्ति बहुत कठिन और सूक्ष्म विषयों को भी, सरलता व शीघ्रता से समझ लेता है।
2. स्मरण शक्ति बढ़ती है, जिससे व्यक्ति देखे, सुने, पढ़े, विषयों को जब चाहे तब उपस्थित कर लेता है।
3. कार्य करने में एकाग्रता बढ़ती हैं, जिससे कार्य अच्छा सम्पन्न होता है।
4. शरीर, मन, इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है।
5. अपने दोषों और बुरे संस्कारों (काम, कोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष आदि) का ज्ञान होता है और इनका नाश भी होता है।
6. अच्छे संस्कार (त्याग, सेवा, परोपकार, दया, दान आदि) जागृत होते हैं, और इनकी वृद्धि भी होती है।
7. साधक निष्काम करने वाला बनता है।
8. ईश्वरीय गुणों (ज्ञान, बल, आनन्द, निर्भयता, सत्य, न्याय, सन्तोष आदि) की प्राप्ति होती है।
9. साधक जानबूझकर झूठ, छल, कपट, अन्याय आदि पाप कर्मों को नहीं करता और पापों के दुःख रूप फल से बच जाता है।
10. शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।
11. मन, बुद्धि, इन्द्रियां सूक्ष्म–भूत, जगत का कारण प्रकृति आदि सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान होता है।
12. ''मैं कौन हूं'' मुझे क्या करना चाहिए ? इत्यादि आत्मा विषयक प्रश्नों का समाधान हो जाता है। (आत्मा का प्रत्यक्ष हो जाता है।)
13. ईश्वर की महानता का ज्ञान होता है, जिससे ईश्वर के प्रति अत्यन्त श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, आकर्षण उत्पन्न होता है।
14. ईश्वर का प्रत्यक्ष (साक्षात्कार) होता है, फलस्वरूप उससे विशेष ज्ञान, बल, आनन्द आदि की प्राप्ति होती है।
15. संसार के सब दुःखों से छूटकर, आत्मा ईश्वर के नित्य आनन्द को भोगता है। (मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।)

– कैलाश काका पाटीदार
आर्य समाज ग्राम सुवासा

महर्षि दयानन्द कन्या गुरुकल मोहन बडोदिया का 5वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

ईश्वर की कृपा से और अनेक आर्यजनों के सहयोग से गुरूकुल ने अपना 5 वां स्थापना दिवस 26 व 27 नवम्बर 23 को मनाया। वैदिक धर्म के प्रति समर्पित और पवित्र भावना से संचालित हो रहा गुरूकुल निरंतर प्रगति की ओर अग्रषित हो रहा हैं। समयदानी और आर्थिक रूप से दान दाताओं का सहयोग व आर्शिवाद भी प्राप्त हो रहा हैं। इस अवसर पर आर्य समाज के भामाषाह के रूप में स्थापित नाम महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच) के पुत्र श्री महाशय राजीव जी गुलाटी मुख्य अतिथि के रूप पधारे थे। अपने आत्मीयता से युक्त वक्तव्य ने कार्यक्रम की उपस्थिति, और कन्याओं की प्रस्तुति को बहुत सराहा।

बड़ी मात्रा में नवयुवको की उपस्थिति को देख अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। इसके साथ ही उन्होने गुरूकुल की प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सहयोग की घोषणा की गुरूकुल का और विस्तार करने का भी सुझाव दिया। इस हेतु भूमी प्राप्त करने के लिए भी कहा।

इस समय उनकी धर्म पत्नी श्रीमती ज्योति गुलाटी भी आमन्त्रित थी किन्तु कतिपय कारणों से वे नहीं आ सकीं। किन्तु आगामी कार्यक्रम में उनके साथ पुनः आगमन का भी श्री गुलाटी जी ने आश्वासन दिया। आपके आने से एक उत्साह का वातावरण बन गया।

आपके साथ ही दिल्ली से जितेन्द्र जी भाटिया भी कार्यक्रम में उपस्थित थे उन्होंने ने महाशय राजीव जी का परिचय दिया संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया तथा गुरूकुल में पहले से ही जुड़ा हूं आगे भी जुड़ा रहूंगा। मुझे 2 साल बाद आने का अवसर मिला इस बीच बहुत परिवर्तन हो गया देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही हैं। (श्री जितेन्द्र जी ने पहले गुरूकुल के लिए एक गाय और 51000/- हजार रूपए का सहयोग किया) पुनः एक गाय गुरूकुल के लिए देने की घोषणा की।

कार्यक्रम में गुरूकुल के मुख्य संवरक्षक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य अध्यक्ष के पद को सुशोभित करने हेतु पधारें थे।

यद्यपि वे इन दिनों में अन्य कार्यक्रमों में बहुत व्यस्त थे किन्तु गुरूकुल के आग्रह को मान्य कर आप पधारें। अपने उद्‌बोधन में गुरूकुल के भौतिक निर्माण और कन्याओं के वैदिक सिद्धान्तों पर, मन्त्रोच्चारण और शारिरिक प्रदर्शन को देख कर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की तथा गुरूकुल को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। हमेशा की तरह 5 लाख रूपए की घोषणा गुरूकुल व्यवस्था व आवश्यक कार्यो के लिए की।

प्रसिद्ध चिकित्सक पूर्व डीन एम. जी. एम. मेडिकल कांलेज इन्दौर श्री डॉ. डी. के. तनेजा 27 नवम्बर को मुख्य अतिथि के रूप में पधारें।अपने उद्‌बोधन में आपने गुरूकुल भवन व कन्याओं की प्रस्तुति और व्यायाम प्रदर्शन को देख कर प्रसन्नता व्यक्त की 5000/– रूपए का पारितोषिक प्रदान किया एवं 51000/– हजार रू भी गुरूकुल को भेंट किए। भविष्य में गुरूकुल के निरंतर सहयोगी बने रहने तथा दूसरों को भी इसके सहयोगी बनाने का आश्वासन अपने उद्‌बोधन में दिया।

श्री विनय जी धनक मुम्बई से कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे। गुरूकुल में दूसरी बार सपत्नीक पधारें थे पूर्व में भी आपने 50000/– की राशि गुरूकुल को भेंट की थी इस बार आने पर पुनः आपने गौशाला व अन्य निर्माण हेतु अपने माता पिता की स्मृति में 700,000/– रूपए की दान की घोषणा की। अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में उन्होंने कहा किवे गुरूकुल से हमेशा के लिए जुड़ चुके है समय समय पर यहां आते रहेगें आगे भी गुरूकुल के लिए वे सदैव सहयोगी रहेगें।

न्यायमूर्ती श्री वीरेन्द्र दत्त जी ज्ञानी गुरूकुल समिति कार्यकारिणी संवरक्षक सदस्य भी है आपने दिनांक 26/11/23 के कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री राजीव गुलाटी जी को शीघ्र ही कार्यक्रम से जाना था इसलिए अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में आपने श्री राजीव जी गुलाटी को उनके पिता के कार्य पथ पर चलने हेतु धन्यवाद दिया तथा कहा कि एक सुपुत्र का यही कर्तव्य होता हैं। कार्यक्रम में कन्याओं की प्रस्तुति और उन्हें प्रशिक्षित करने वाली आचार्याओं की भी प्रशंसा की गुरूकुल के लिए सभी आर्यजन सहयोगी बने यह भाव व्यक्त किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रुप में पधारे श्री राजीव जी गुलाटी का परिचय श्री जितेन्द्र जी भाटिया ने दिया । अपने उद्बोधन में श्री राजीव गुलाटी जी ने गुरुकुल की भूरी–भूरी प्रशंसा की । छात्राओं के प्रदर्शन से वे अभिभूत हो गये अपने उद्बोधन में अनेक बार उन्होंने गुरुकुल के प्रति उत्साहवर्धक कथन किये तथा जीवन को सत्य और कठोर परिश्रम के आधार पर सफल बनाने का सूत्र दिया । इस अवसर पर आपने गुरुकुल की बाऊंड्री वॉल निर्माण हेतु राशि प्रदान करने की घोषणा की और इस निमित्त ११ लाख की राशि भी प्रदान करदी गई । आपने गुरुकुल हेतु और स्थान प्राप्त करने, भवन निर्माण करने तथा कम से कम ३०० सौ कन्याओं की व्यवस्था करने का और उसमें पूरा सहयोग देने की चर्चा अपने उद्बोधन में की । अपने उद्बोधन में आपने बडे सरल

एवं सहज शब्दों में मनमोहक चर्चा की। आपने यह भी कहा की मैं इस बार धर्मपत्नी के साथ ही आने वाला था उन्हें यहाँ आकर बहुत अच्छा लगता। किन्तु किन्ही कारणों से वे नहीं आ सकी आगामी समय उन्हें भी साथ लाऊँगा।

कार्यक्रम – अतिथि स्वागत एवं स्वागत गीत के पश्चात गुरूकुल की आचार्या सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार ने गुरूकुल परिचय, प्रगति और भावी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। इसी तारतम्य में कुछ आवश्यकताओं की ओर भी सबका ध्यान आकर्षित किया। अनेक व्यक्तियों ने सहयोग की घोषण की अश्वासन दिया।

कार्यक्रम में डॉ नंदिता जी शास्त्री पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणासी से पधारी थी। गुरूकुल में जिन कन्याओं ने इस सत्र में प्रवेश लिया उनको यज्ञोपवीत प्रदान कर वेदारंभ संस्कार करवाया।

श्री मोहित जी शास्त्री भजनोपदेशक उत्तर प्रदेश से पधारे थे उनके भी भावपूर्ण भजनों को श्रोताओं ने बहुत सराहा।

इस वर्ष का यह आयोजन अभी तक के आयोजनों से भी भव्य रहा। गुरूकुल के प्रति क्षेत्र में दूर दूर तक सहयोग की भावना बढ़ रही हैं। दान दाताओं के सहयोग से निर्माण कार्य निरंतर चल रहा हैं। हैं। गुरूकुल के लिए सुरक्षा और सुविधा दोनों का ध्यान रखते हुए अभी और भी निर्माण होना है इस हेतु गुरूकुल के प्रति सहयोग भाव रखने वाले दानी महानुभावों से अपेक्षा हैं।

कार्यक्रम का संचालन श्री अतुल जी वर्मा (सभा मंत्री) श्री दक्षदेव जी गौड़ (संभागीय उपप्रधान इन्दौर संभाग) श्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार (संभागीय उपप्रधान उज्जैन संभाग) श्री दरबार सिंह जी आर्य (संभागीय उपमंत्री उज्जैन संभाग) एवं ऋचा जी शास्त्री (अधिक्षिका गुरूकुल) द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में प्रान्त के सभ्रन्त नागरिक व आर्य समाज के पदाधिकारी सम्मिलित हुए जिनमें श्री इन्द्रप्रकाश जी गांधी शिवपुरी, श्री मानसिंग जी आर्य गोरमी, श्री श्रीधर जी शर्मा गुना, डॉ. जयपाल सिंह जी अम्बाह, श्री वेदप्रकाश जी शर्मा भोपाल, श्रीमती पुष्पान्जली जी शर्मा भोपाल, श्री प्रकाश जी अग्रवाल रतलाम, श्री बंशीलाल जी आर्य, श्री मनोज जी स्वर्णकार नीमच।

कार्यक्रम की सफलता में श्री ओमप्रकाश जी आर्य महू, श्री वेदप्रकाश जी आर्य (कोषाध्यक्ष गुरूकुल), श्री नारायणसिंह जी आर्य करजू, श्री सिद्धनाथ आर्य, श्री रमेश जी पूरी मंडोदा, श्री दुर्गाप्रसाद जी आर्य मंडोदा, श्री मुरलीधर सोनी, श्री मोहनलाल जी आर्य, श्री शान्तीलाल जी कारपेन्टर, श्री हरिष जी फौजी, श्री श्याम पाटीदार, श्री अशोक जी फौजी, श्री कैलाश आर्य रामली, श्री शंकर सिंह आर्य, श्री वल्लभ जी पाटीदार कक्कू, श्री भरत जी आर्य रामली, श्री दारासिंह जी आर्य कानड़, श्री गोकुल जी आर्य एवं गुरूकुल परिवार के समस्त सदस्यों का कर्मचारियों का बहुत सहयोग रहा।

महर्षि दयानन्द कन्या गुरुकुल
5 वां स्थापना दिवस समारोह

श्री राजीव जी गुलाटी का स्वागत

सभा संरक्षक श्री इन्द्रप्रकाश जी गाँधी
एवं श्री राजीव जी गुलाटी

श्री गुलाटी जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

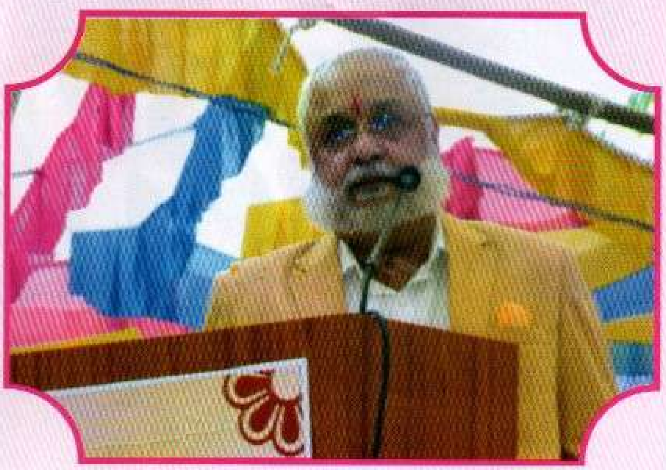

श्री गुलाटी जी उद्बोधन देते हुए

श्री जितेन्द्र जी भाटिया

सभा मंत्री श्री अतुल जी वर्मा
श्री राजीव जी का स्वागत करते हुए

सभा संरक्षक श्री इन्द्रप्रकाश जी गाँधी
एवं श्री राजीव जी गुलाटी

न्यायमूर्ति श्री व्ही.डी. ज्ञानी जी
एवं राजीव जी गुलाटी

महिला श्रोतागण

कार्यक्रम में श्रोतागण

डॉ. तनेजा जी का स्वागत करते
डॉ. दक्षदेव जी गौड

डॉ. तनेजा जी उद्बोधन करते हुए

सार्वदशिक सभा प्रधान सुरेश चन्द्र जी का आगमन

सार्व सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी उद्‌बोधन देते हुए

सभा प्रधान सुरेशचन्द्र जी को
स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

श्री गुलाटी जी के साथ
गुरुकुल कन्याओं का चित्र

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
का स्वागत करते हुए श्री अतुल जी वर्मा जी

श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य
श्री विनय जी धनिक का स्वागत करते हुए

सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
एवं श्री इन्द्रप्रकाश जी गान्धी

नन्दिता जी उद्बोधन देते हुए

संस्कार करवाते हुए आचार्या नंदिता जी
एवं आचार्या ऋचा जी

नवीन कन्याओं का प्रवेश

सनातन संस्कृति का मान / गुरुकुलीयण शिक्षा महान

देश मेरा विश्व गुरू कहलाता था।
विश्व शिक्षा लेने यहां आता था।।

सनातन संस्कृति शिक्षा का आधार था।
सुखी जीवन जीने का यही सार था।।

लाखों शिक्षा संस्कार केन्द्र चलाए जाते थे।
वे सभी गुरूकुलों के अन्तर्गत आते थे।।

संस्कार, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा का यही था स्थान ।
इसी शिक्षा से राम, कृष्ण, गौतम, कणाद, हुए महान।।

दुर्भाग्य हुआ महाभारत युद्ध ने किया भारी नुकसान ।
वीरों विद्वानों से ये धरती हो गई विरान।।

फिर, मत, मतान्तर, मजहब, बढ़ने लगे।
वैदिक सिद्धान्तो से मानव हटने लगे।।

पाश्चात्य विचार धारा के जमने लगे पांव।
मैकाले की योजना ने संस्कृति को दिए घाव।।

धीरे धीरे शिक्षा का सत्य स्वरूप सिमिटता गया।
सनातन धर्म की शिक्षा का प्रभाव मिटता गया।।

स्वाध्याय विहिन समाज धर्म नाम पर भ्रमित हुआ।
अनेक विचारों से भ्रम, अंधविश्वास, उदित हुआ।।

इसलिए आज सनातन धर्मी कहलाने वाले सनातन धर्म से दूर है।
अनेक मतमतान्तरों को ही, सनातन मानने पर मजबूर हैं।।
चिन्ता है सनातन मान्यताओं पर जब कोई प्रश्न उठेगा।
तो उनके प्रश्नों का समाधान कौन करेगा ?
तब मैकाले की, स्कूली शिक्षा कुछ काम न आवेगी।
केवल, केवल, गुरूकुल शिक्षा ही लाज बचा पायेगी।।
कौन समझेगा कौन समझायेगा जब वह ज्ञान ही न पढ़ाया जावेगा।
इससे तो पाश्चात्य विचारों का प्रभाव और बढ़ता जायेगा।।
क्योकि अब भौतिक उन्नति को ही जीवन सार मान रहे।
शिक्षा को मात्र धनोपार्जन उपाय जान रहे।।
इसलिए डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर, व्यापारी, राजनेता या कोई अधिकारी
बनने तक ही लक्ष्य सिमट गया है।।
मानव बनने की प्रक्रिया में अब अवरोध आ गया है।।
यही दर्द लिए तो महर्षि ने विष पान किया ।
स्वंय को मिटा कर हमें जीवन दान दिया।
अति हो रही विनाश की, अमानुषता चरम सीमा पर है।
है भयभीत समस्त विश्व, अस्मिता का सबको डर हैं।।
भवनों, भाषणों से संस्कृति नहीं बच पावेगी।।
बचेगी तब, जब गुरूकुल शिक्षा घर घर जायेगी।।
आज नहीं तो कल, फिर से मानेगा सारा जहान
सनातन संस्कृति का मान, गुरूकुलीय शिक्षा महान।

प्रकाश आर्य, महू

महू में 12 वाँ गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

महू – वर्ष 2001 से प्रारंभ प्रति दो वर्ष में होने वाले गायत्री महायज्ञ का 12 वां आयोजन दिनांक 23 से 27 दिसम्बर तक स्थानीय रामबाग एवं उत्तम गार्डन में सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम नगर में एक शोभायात्रा नगर के प्रमुख स्थानों से होकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। शोभा यात्रा में गायत्री मन्त्र गायन हो रहा था, एक बड़े ट्राले पर बैठकर महर्षि दयानंद कन्या गुरूकुल की कन्यायें यज्ञ कर रही थी। सबसे पहले 2 घोड़ो पर ओम ध्वज लिए दो किशोर बैठे थे।

इसके पीछे विभिन्न महापुरूष की वेशभूषा में सुसज्जित श्री एकेडमी कोदरिया के छात्र एक ट्राली पर बैठे थे। स्कूल व गुरूकुल के छात्र छात्राएं महिलाए पुरूष नारे लगाते हुए पैदल चल रहे थे। पीछे चार पहिया वाहनों में विद्वान, व वृद्धजन बैठे थे।

कार्यक्रम स्थल पर ओम ध्वजारोहण श्री वीरेन्द्रदत्त जी ज्ञानी के कर कमलों से हुआ। ध्वजगान सुश्री सुनीति शर्मा, सुश्री नीधी शर्मा ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में 11 कुंडीय भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया गया अति सुन्दर सुसज्जित यज्ञ शाला देखने के लिए दर्शकों की बड़ी संख्या प्रतिदिन आती रही। यज्ञ के ब्रहमा आचार्य

श्री योगेन्द्र याज्ञिक होशंगाबाद से पधारे थे। मन्त्र पाठ महर्षि दयानंद कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया की कन्याओं द्वारा किया गया। छोटी उम्र की बालिकाओं का मन्त्र विशेष आकर्षण बना हुआ था। चारोवेदों के 100 / 100 मंत्रों से किए गए

यज्ञ में मन्त्र पाठ कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया की श्रीमती ऋचा जी शास्त्री एवं सुश्री नेहा शास्त्री ने किया। पांच दिवसीय यज्ञ में लगभग 450 यज्ञमानों ने आहुति दी और पूर्णाहुति में भी लगभग 700/800 श्रद्धालुओं ने आहुति दी।

कार्यक्रम में दोपहर 2 से 4.30 तक भगवत वेद कथा कन्या गुरूकुल की प्राचार्या सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार ने की। बड़ी संख्या में श्रोताओं की उपस्थिति होती रही कथा हेतु नियत परिसर पूरा भर जाता था। इसी मध्य भजनों की भी मनमोहक प्रस्तुति भी सुबह दोपहर शाम में होती रही श्रोताओं ने भजानों का बहुत आनंद लिया। इस हेतु श्री मोहित शास्त्री (बिजनोर उ.प्र.) श्री काशीराम जी अनल, श्री नीरज जी शर्मा, श्री विनोद जी आर्य, श्री दिलिप जी आर्य, श्री सुरेश जी आर्य, सुश्री सुनीति जी शर्मा, सुश्री निधी जी शर्मा, आचार्या ऋचा जी शास्त्री, एवं कन्याओं द्वारा प्रस्तुति दी गई।

सांयकालीन कार्यक्रम व्याख्यान माला हेतु नियत था। इसमें दो दिन आचार्य श्री योगेन्द्र जी याज्ञिक के और दो दिन आचार्य श्री वागेश जी एटा. के व्याख्यान हुए। रात्री कालीन सत्र में धर्म समाज व राष्ट्र पूर्व पर निर्धारित विषयों पर व्याख्यान सुनने नगर के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित होते रहे।

इस बार अन्य वर्षो की तुलना में श्रोताओं की संख्या में काफी वृद्धि रही। अनेक नए व्यक्ति कार्यक्रम के साथ जुड़े। कार्यक्रम में स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त इन्दौर, राऊ, रंगवासा, सनावद, धार, नान्दरा, मुल्ठान, सनावद, सिहोर, भोपाल, शिवपुरी, गुना, भिंड, गोरमी, झाबुआ, करजू, बुरलाय, मुरैना, आदि दूर दूर से श्रोता पधारे थे।

पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश शासन सुश्री उषाजी ठाकुर, न्यायमूर्ति श्री वी.डी. जी ज्ञानी, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी श्री इन्द्रप्रकाश जी गान्धी, श्री अतुल जी वर्मा, श्री दक्षदेव जी गौड़, श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य, श्री मानसिंग जी यादव, श्री वेदप्रकाश जी आर्य, श्री वेद प्रकाश जी शर्मा, श्री प्रतापसिंह आर्य, श्री दरबारसिंह आर्य, श्री ललित जी आर्य, व गणमान्य वरिष्ठ सदस्य भी सम्मिलित हुए।

12 वाँ गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

भव्य शोभा यात्रा

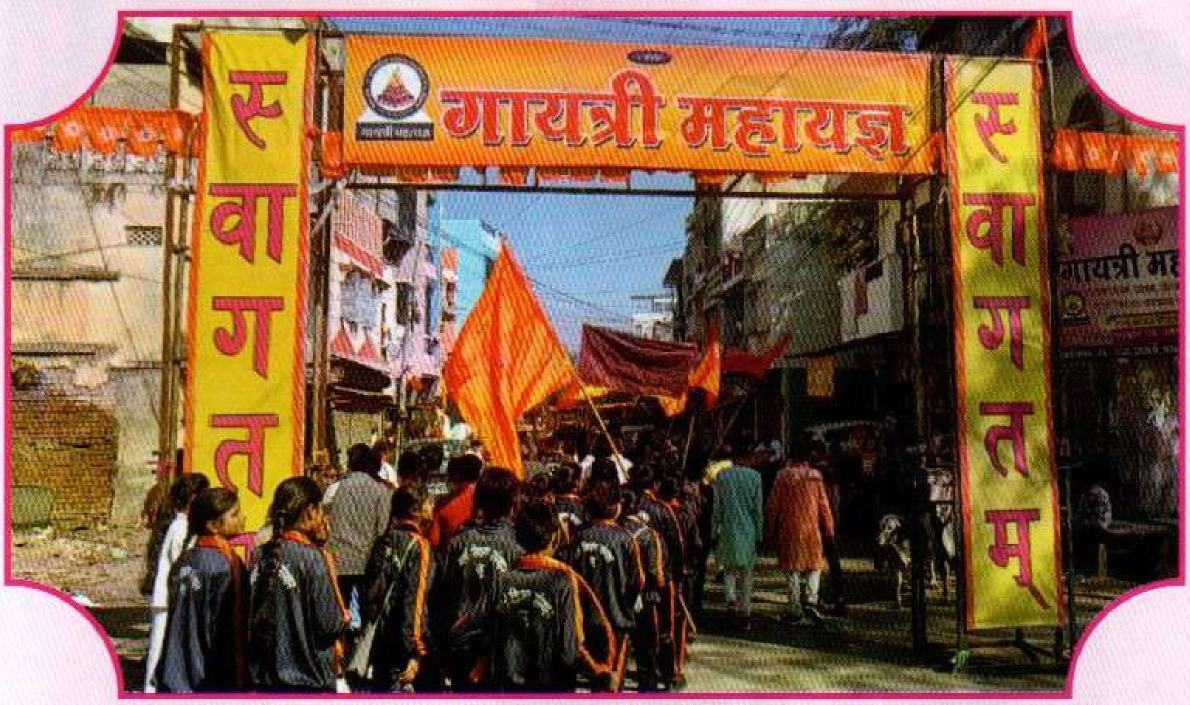

भव्य आकर्षक यज्ञ शाला

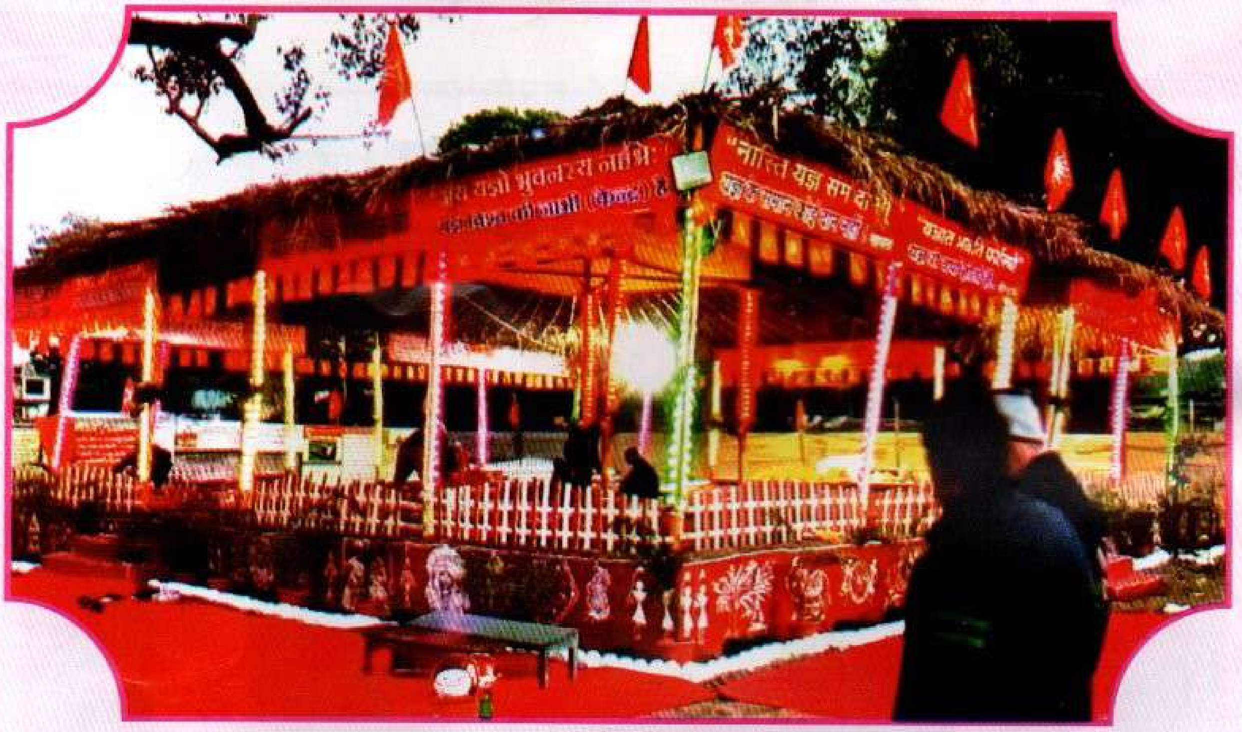

यज्ञ शाला में प्रवचन सुनते हुए

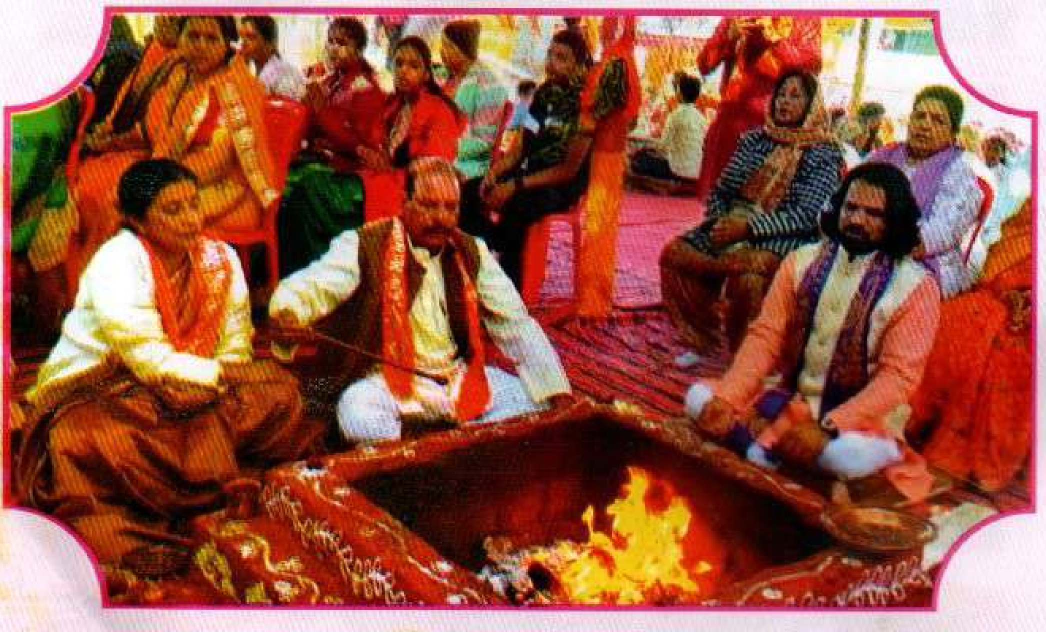

वेदकथा करते सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार

मोहित शास्त्री द्वारा भजन प्रस्तुति

गुरुकुल मोहन बडोदिया की कन्याओं द्वारा भजन

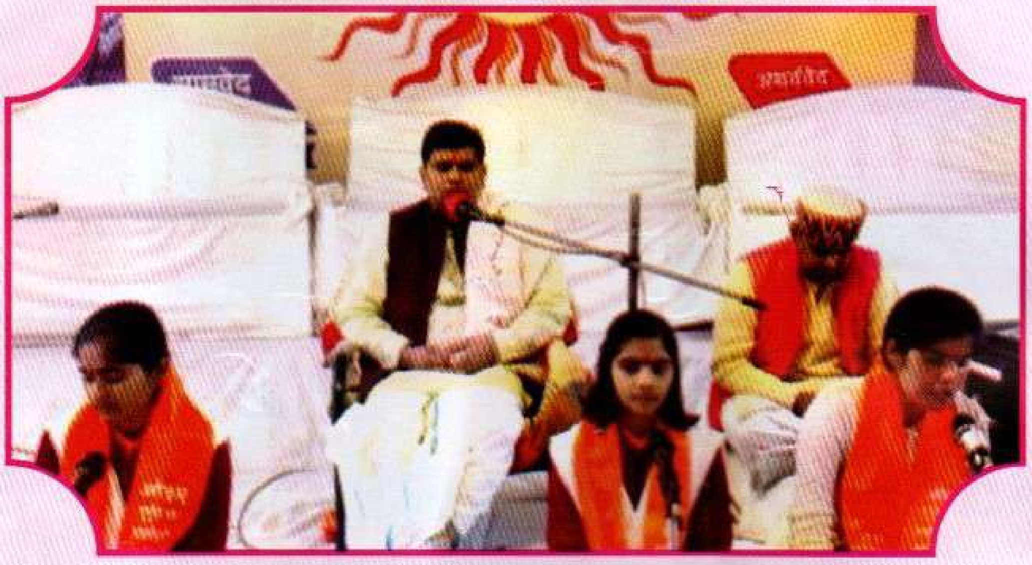

यज्ञ ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

भजन प्रस्तुति सुश्री सुनिति शर्मा, विनोद आर्य एवं संजय आर्य

छोटी बालिका ओ३म् ध्वज के साथ

महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण कितना सार्थक व उपयोगी

अभक्ष्य पदार्थ – विदेशी लोग वेद में वर्णित अभक्ष्य वस्तुओं का भक्षण करते हैं। यह धर्म विरूद्ध है। हम लोगों को ये वस्तुयें नहीं ग्रहण करनी चाहिये। खानपान में ऐसे लोगों के संसर्ग से दूर रहकर अपने खाने–पीने की विधि सुरक्षित रखने की व्यवस्था विदेश में करनी चाहिये। (ऋ. दया. आ. स. से सं. म. अभि. पृ. 84)

अभिमान – अभिमान अर्थात् अहंकार है। वह सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता है। इस वास्ते अभिमान करना न चाहिये। (सत्यार्थ प्रकाश पृ. 34)

अभिलाषा – हमारा शरीर बहुत देर नहीं रहेगा। आप आजीवन हमारी पुस्तकों से उपदेश लेते रहना। जहॉ तक बन पड़े अपने भूले भटके भाइयों को भी सन्मार्ग दिखलाते रहना। (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 405)

अमूर्त का ध्यान कैसे करें :– किसी मूर्तिमान पदार्थ का ध्यान नहीं करना चाहिये। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वसृष्टि का कर्ता, सृष्टि को एकक्रम में चलाने वाला, नेता, पालनकर्ता और ऐसे ही अनेक ब्रह्माण्डों का स्वामी है, उसका स्मरण करके उसकी महिमा का ध्यान करना चाहिए। परमेश्वर के गुणों का चिन्तन उसकी महिमा का वर्णन, संसार के उपकार में चित्तवृत्ति लगाने की प्रार्थना करना यही ध्यान है।

(महर्षि दयानन्द जी च. पृ. 577)

अवतारवादियों को चुनौति :– मूर्तिपूजा और अवतारवाद आदि विषयों पर चाहे जो आकर शास्त्रार्थ कर ले। हम उसके भ्रम निवारणार्थ सर्वदा–सर्वदा समुद्यत् हैं।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 228)

अविद्या :– जिस पुरूष को यह अभिमान होता है कि मैं धनाढ्य हूं अथवा मैं बड़ा राजा हूँ उसे अविद्या का दोष है। दूसरे शरीर का क्षीण रहना, यह अविद्या के कारण ही होता है। (पूना प्र. उपदेश मंजरी पृ. 11)

अविश्वास :– जो विश्वास से उल्टा है। जिसका तत्व अर्थ न हो, वह ''अविश्वास'' कहाता है। (आर्योद्देश्यरत्नमाला पृ. 3)

असत्यवादी :– देखो ! थोड़े से जीवन में धर्मात्मा अर्थात् सत्यवादी, सत्यमानी,

सत्यकारी मनुष्य धर्मार्थ, काम मोक्ष फलों को प्राप्त होता और मिथ्यावादी, मिथ्यामानी अनृतकारी सर्वदा सर्वदा दुःख को प्राप्त होता है। (ऋ.द.प.वि.भाग 2 पृ. 626)

असत्यभाषी :– मिथ्या बोलने, मानने और करने वाले को इस जन्म और परजन्म में सुख व प्रतिष्ठा नहीं होती। (ऋ.द.प.वि.भाग 2 पृ. 626)

देखिए तो, कितना दयालु है, ईश्वर

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।

ऋ. 1/1/9

धर्म प्रेमी सज्जनों, जिस तरह एक पिता अपने पुत्र को सुशिक्षा, सभ्यता सदाचार विद्या ज्ञानादि गुणों से युक्त करके उत्तम विद्वान बनाकर धनादि ऐश्वर्यों को प्रदान करता है। ठीक वैसे ही दयालु, कृपालु, ज्ञान स्वरूप, ज्ञान प्रदाता परमेश्वर जो सबकी माता, तथा सबका पिता है अपना वेद ज्ञान रूपी अमृत पिलाकर भौतिक सुख अर्थात आयु, बल, सन्तान, यश, स्वास्थ्य, धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य से पूर्ण करके पारलौकिक अभौतिक अर्थात परमानन्द, पूर्णानन्द, मोक्षानन्द प्रदान करता है। यदि ऑख उठाकर संसार में देखते हैं तो एक माता केवल मॉ का ही उत्तरदायित्व निर्वाह कर सकती है। पिता केवल पिता का, भाई केवल भाई का, मित्र, सखा, बन्धु, बहिन, पुत्र आदि अपना–अपना उत्तरदायित्व ही निभाते हैं दूसरे का नहीं। किन्तु जरा विचार कीजिए, जरा सोचिए वह दयालु, कृपालु परमपिता परमात्मा तो सारे नाते रिश्ते, सारे सम्बन्धों के उत्तरदायित्व को सत्य निष्ठापूर्वक निभाता है।

परम दयालु ईश्वर ने प्राणीमात्र के कल्याण के लिए इस सृष्टि में समस्त भोग्य पदार्थों और कर्म करने में सहायक साधनों को रचकर महान उपकार किया है। साथ ही एक विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सृष्टि में रचे हुए समस्त पदार्थों का ज्ञान, किस पदार्थ का क्या उपयोग है और उससे कैसे लाभ लिया जा सकता है यह सत्य ज्ञान वेद के रूप में देकर मनुष्य मात्र पर और भी विशेष महान उपकार किया है। जो व्यक्ति ईश्वरीय ज्ञान वेद का अनुसरण करता है तदनुसार आचरण करता है उसे भौतिक सुख भी मिलता है और लक्ष्य (मंजिल) भी मिलती है अर्थात् परमानन्द की भी प्राप्ति हो जाती है और जो वेद ज्ञान के विपरीत चलता है वह अज्ञानता के कारण सुख और आनन्द दोनों

से वंचित हो जाता है। क्योंकि ज्ञान ही सब सुखों का देने वाला हैं। जैसे एक व्यक्ति ज्ञान का विनियोग करके मोटर साईकिल के द्वारा 100 किलोमीटर दूर अपनी मंजिल को सुख पूर्वक थोड़ी देर में प्राप्त कर लेता है किन्तु दूसरा व्यक्ति जिसके पास मोटर साईकिल तो है किन्तु चलाने की अकल ही नहीं है अर्थात् ज्ञान के अभाव में साधन उपलब्ध होने पर भी उसका लाभ नहीं ले पाता और पैदल चलता हुआ दुःखी होता है तथा मंजिल भी नहीं मिलती। सृष्टि के एक–एक पदार्थ का बारीकी से अध्ययन करने पर, चिन्तन करने पर, उस महान प्रभु की महिमा का, कृपा का साक्षात्कार होता है। संसार के प्रत्येक पदार्थ में अलौकिक दिव्य शक्तियां भरी हुई हैं किसी एक पदार्थ को लेकर आप जीवन भर उस पर अन्वेषण (रिसर्च) कर सकते हैं वेद ज्ञान के आधार पर नये–नये रहस्यों को प्रकट कर सकते हैं पदार्थों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए विज्ञान के द्वारा संसार का उपकार करके उन्नति के शिखर पर पहुंच सकते है।

वेदों का स्वाध्याय, चिन्तन, मनन आदि करने के लिए शरीर का स्वस्थ होना अति आवश्यक है शास्त्रकार ने कहा भी है **''शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्''** स्वस्थ शरीर ही धर्म का प्रारंभिक साधन है।

भौतिक जगत में दृष्टि डालने पर पता चलता है कि प्रत्येक मनुष्य दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करना चाहता है। वैसे उस प्रभु ने ऐसी व्यवस्था भी की है कि कोई रोगी न हों, कोई दुःखी न हो, किन्तु अज्ञानता से जब व्यक्ति उस प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करता है तो दुःखी, रोगी हो जाता है। इसके बाद भी उस प्रभु ने रोगों के निदान के लिए कुछ चमत्कारी औषधियां भी रचीं हैं और उनका ज्ञान भी वेदों में दिया है। यहां कुछ औषधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाती है ताकि आप सभी लाभान्वित हो सकें।

1) गुग्गुलु – अथर्ववेद काण्ड उन्नीस सूक्त अड़तीस मन्त्र संख्या एक एवं दो देखें भाष्य हरिशरण सिद्धान्तालंकार – उस व्यक्ति को राजरोग नहीं घेरते, जो गुग्गुलु की गन्ध का सेवन करता है। यह गुग्गुलु औषधी नदी के तट पर अथवा समुद्र के किनारे पर उत्पन्न होता है। काला गुग्गुलु को लेकर इमामदस्ता (ऊखल) में खूब कूटें आयुर्वेदानुसार यदि गुग्गुलु में एक लाख मूसली लग जावें तो सब रोगों की औषधि बन जाती है। यह वात नाशक प्रधान औषधि है। यज्ञ में प्रयोग करके इसकी गन्ध का सेवन करें।

2) कुष्ठ – अथर्ववेद का. 19 सू. 39 मं. 5 – यह कुष्ठ नामक औषधि केवल तीन बार

प्रयोग करने मात्र से ही समस्त रोगों का नाश कर देती है। "त्रि:..विश्वभेषज" सब रोगों की चिकित्सा है। यह औषधि हिमालय की ऊँची बर्फ से ढंकी चोटियों पर सूर्य प्रकाश चमकने पर उत्पन्न होती है। सब प्रकार के ज्वर, सब प्रकार के कुष्ठ रोग आदि अर्थात् उपरोक्त सब रोगों की चिकित्सा है। इसी सूक्त के दसवें मन्त्र में इस औषधि को ब्रह्मा कहा है।

3) जंगिड़ – यह औषधि अपने में निराली है तथा सबसे विशेष गुण रखती है शीघ्र बुढ़ापा नहीं आने देती, खाई हुई अन्य वस्तुओं से दुष्प्रभाव (रिएक्शन) को खत्म कर देती है। नख से शिर पर्यन्त होने वाले रोगों का शमन करती है। देखें अथर्ववेद का. 19 सू. 34, 35 के सभी मन्त्र।

4) सोमलता – यह भी अपने आप में एक अद्वितीय चमत्कारी औषधि है। अनेकों नाम से यह जानी जाती है, इसका एक नाम अमृता भी है जो व्यक्ति को रोगों से तड़प–तड़प कर मरने नहीं देती, इसीलिए इसे अमृता कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार यह सोमलता चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार घटती बढ़ती है। शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन एक–एक पत्ता बढ़ता है और कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन एक–एक पत्ता गिरता है अमावस्या को एक भी पत्ता नहीं रहता है। पूर्णिमा को पूरे 15 पत्ते हो जाते हैं। यह इस समय उपलब्ध नहीं है। सोमलता के विकल्प के रूप में गिलोय का प्रयोग किया जाता है। यह सोमलता विद्वान वैद्यों के खोज का विषय है।

5) अपामार्ग – यह औषधि भी प्रसिद्ध है इसमें भी परमात्मा ने चमत्कारी गुण भर रखें हैं इसके भी अनेकों नाम हैं अपामार्ग ओंघा, चिरचिटा, लटजीरा आदि। यदि इसके बीजों की खीर बनाकर खायें तो कई दिनों तक भूख नहीं लगती। जिनको भष्मक रोग हों वे इसके प्रयोग से ठीक हो जाते हैं अथवा जिनको बिल्कुल भूख नहीं लगती वे भी ठीक हो जाते हैं। बन्ध्यत्व और नपुंसकता को नष्ट करती है। प्यास की कमी या अधिकता को नष्ट करके स्वास्थ्य प्रदान करती है। मृत गर्भ को भी सरलता से बाहर निकालने में इसका प्रयोग रामबाण है। देखें अथर्ववेद का. 4 सूक्त 17, 18, 19 के सभी मन्त्र। इसीलिए वेदों का स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करके ज्ञान और विज्ञान को प्राप्त करें तथा शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से उन्नति को प्राप्त करें। प्रभु की कृपा का लाभ लें यही वेदों का, महर्षि दयानन्द सरस्वती का तथा आर्य समाज का सभी के लिए सन्देश है। **"सर्वे भवन्तु सुखिन:"**

आर्य समाज के मूर्धन्य
लाला लाजपतराय

आर्य समाज के जिन महापुरूषों ने स्वदेश हित के सर्वोत्कृष्ट बलिदान किये, उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है। ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्र भक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा है, और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाए हैं।

जन्म से वैश्य, किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय, लाला लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुढ़के में 28 नवम्बर 1865 को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे।

1880 में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाजपतराय लाहौर आए। गवर्नमेंट कॉलेज से एफ. ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएं साथ–साथ उत्तीर्ण की। 1882 के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए। लाला साईंदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने। पं. गुरूदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कॉलेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे, वहां ये लोग आर्य समाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्ता थे।

डी ए वी कॉलेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपतराय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिध मण्डलों के सदस्य बनकर कॉलेज की स्थापना के लिए धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगरों में जाते रहे। जब यह महाविद्यालय सुचारू रूप से चल पड़ा, तब इसकी शिक्षा नीति प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी ए वी कॉलेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरूप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए, किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सत्याग्रह के आन्दोलन चलाए गए और सरकारी स्कूलों और कॉलेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी ए वी कॉलेज के संचालकों को, देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कॉलेज को बन्द कर देने कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने अपनी दूरदर्शिता से ऐसा कदम उठाने से इंकार कर दिया।

उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जानी चाहिए।

1888 में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े। प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। 1906 में पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया।

लाला लाजपतराय ही प्रथम महापुरूष थे, जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया, और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्शका विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचारधारा का प्रवेश कराया। उन्होंने 1905 की बनारस कांग्रेस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय, उनका स्वागत करने का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीतसिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर, तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के मण्डले नगर में नजरबन्द कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचारपूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अव्हेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था। लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जन नायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता ने उन्हें सिर ऑखों पर उठा लिया।

आर्य समाज में रहकर ही लालाजी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। 1899 में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया, तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। 1920 में विदेश यात्रा से लौटने पर, उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया। इसी वर्ष वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। 1924 में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठ वक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्ता समर्पित समाज सेवक, शिक्षाशास्त्री, गंभीर चिन्तक तथा विचारक थे।

उनकी लिखी ''दी आर्य समाज'' नामकी पुस्तक 1914 में इंग्लैण्ड से प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है।

।। ओ३म्।।

चलो टंकारा चलो टंकारा चलो टंकारा

महर्षि दयानंदजी के दो सौ वें जन्म दिवस पर युग पुरुष महर्षि दयानन्द के दो सौ वें जन्म दिवस को मनाने पहेतु दिनांक 10 से 12 फरवरी को टंकारा में भव्य आयोजन किया जा रहा है। आयोजन में देश-विदेश से अनेको श्रद्धालु पधार रहे हैं।

आगन्तुक अतिथियों के लिए समुचित व्यवस्था समिति की ओर से की गई है। जो महानुभाव अपनी सुविधा हेतु होटल में ठहरना चाहते हैं वे अपने व्यय से होटल बुक करवा सकेंगे। इस हेतु सुविधा हेतु श्री अरुण प्रकाश जी वर्मा मोबा 9810086759 से सुविधा हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द जी के दो सौ वें जन्म दिवस के उपलक्ष में आर्य समाजों के लिए

आर्य परिवार और आर्य समाजे इन तिथियों को पर्व के रुप में मनाएँ।

घरों पर एवं समाजों में दीप लगावे, रोशनी कर सजावें। 12 फरवरी को विशेष यज्ञ करें, प्रभातफेरी, निकालें ऋषि लंगर यदि करा सकते हैं तो अवश्य करें।

समाचार...

आर्य समाज मुरैना का वार्षिक उत्सव दिनांक 27, 28 व 29 अक्टूबर 2023 को सम्मान

आर्य समाज मुरैना में बड़े उल्लास पूर्वक वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें वैदिक प्रवक्ता पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी आगरा ने उपदेश एवं भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या दिल्ली ने भजनों से धर्मप्रेमी जनता को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा चबंल संभाग के उपप्रधान श्री मानसिंह आर्य, स्वामी ओंकारानंद जी फरेरा आगरा, श्री केशवमुनि जी सुरपुरा, एवं पं. सत्यप्रकाश जी आर्य पुरोहित उपस्थित रहे। श्री केशवमुनि जी द्वारा मंच संचालन किया गया।

अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी महानुभाव

क्रं.	नाम	राशि
		क्रमशः
144	आर्य समाज टी टी नगर भोपाल	11000/–
145	श्री मदनलाल जी मडोरा इन्दौर	11000/–
146	डॉ. मोहनलाल जी मकवाना आगर	11000/–
147	श्री मुरलीधर जी सोनी आगर	11000/–
148	श्री गोकुलसिंह जी बारकिया बड़ोदिया	11000/–
149	श्री सुरेश जी चौधरी बड़ोदिया	11000/–
150	श्री प्रकाश जी पाटीदार उज्जैन	11000/–
151	श्री राजेन्द्र जी व्यास	11000/–
152	श्री अम्बाराम जी वर्मा उज्जैन	11000/–
153	श्रीमती उषादेवी जी अरूणकुमार जी आर्य राऊ	11000/–
154	श्री लक्ष्मीनारायण जी मुकाती राऊ	11000/–
155	श्रीमती शान्तीबाई रामेश्वर जी माली राऊ	11000/–
156	श्रीमती आशादेवी सत्यनारायण जी मुकाती राऊ	11000/–
157	श्रीमती राजकुमारी रामनारायण जी मुनीम जी राऊ	11000/–
158	श्री विनोद जी अशोककुमार जी मुकाती	11000/–
159	श्रीमती शान्तीदेवी लक्ष्मीनारायण जी सुले राऊ	11000/–
160	श्रीमंती मंजुला ओमप्रकाश जी अग्रवाल उज्जैन	11000/–
161	श्री नरेशचन्द जी आर्य सिहोर	11000/–
162	श्रीमती सरजू देवी जी वृद्धा आश्रम राजस्थान	11000/–
163	श्री दीपचन्द्र जी गोस्वामी, वैभव लक्ष्मीनगर	11000/–
164	श्रीमती हंसा प्रदीप जी चतुर्वेदी उज्जैन	11000/–
165	श्रीमती कामिनी पति ब्रह्मकुमारजी शर्मा, भोपाल	11000/–
166	श्री सुभाषजी सोनी, गोरमी	11000/–
167	श्री अरुणजी उपाध्याय, गोरमी	11000/–
168	श्री दयानन्दजी आर्य, नान्दरा	11000/–
		क्रमशः

समी दानदाता सहयोगीयों को गुरूकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद

कृपया अपना सात्विक दान देकर गुरुकुल के सहयोगी बनें।

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के अन्तर्गत आदेश संख्या 10136/2019-20 में 50 प्रतिशत छूट हेतु मान्य।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना ■ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मज़हबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म तो एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, प्रकाश आर्य द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - अतुल वर्मा, भोपाल

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062